بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा **04 September**, 202**6,** स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(Tabook महीने की तिथि 04 ,1405 हश)

# तवक्कुल अलल्लाह,,,,,,,,,,,,
# आँहज़रत ﷺ की सीरत-ए-मुबारका का कामिल नमूना।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 04.09.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला, ने फ़रमाया: आँहज़रत ﷺ को अल्लाह तआला ने इंसान-ए-कामिल बना कर तमाम इंसानियत के लिए उस्वा-ए-हसना बनाया और हर ख़ुलक़ को आप की ज़ात में पैदा फ़रमा कर उसे ख़ुलक़ -ए-अज़ीम बना दिया। मोमिनों को नसीहत फ़रमाई कि अगर वो अपने अंदर नेक सिफ़ात पैदा करना और ख़ुलक़ के आला मयार हासिल करना चाहते हैं तो इस अज़ीम रसूल की पैरवी करें, क्योंकि यही अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने का ज़रिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जहाँ हर ख़ुलक़ को आला मयार तक पहुँचाया वहाँ मोमिनों को भी इन आला मयारों के हुसूल की कोशिश की तलक़ीन फ़रमाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत में तवक्कुल अलल्लाह का ख़ुलक़ भी निहायत नुमायाँ है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ नबी! हम ने तुझे दुनिया का नगराँ, मोमिनों को ख़ुशख़बरी देने वाला, काफ़िरों को डराने वाला, अल्लाह के हुक्म से उस की तरफ़ बुलाने वाला और एक चमकता हुआ सूरज बना कर भेजा है। मोमिनों को बशारत दे कि उन के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मान और उनकी ईज़ा-देही को नज़र-अंदाज़ कर दे और अल्लाह पर तवक्कुल कर, अल्लाह कारसाज़ी के लिए काफ़ी है। इस में मोमिनों के लिए भी ख़ुशख़बरी है कि अगर वो ईमान पर क़ायम रहें, अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल करें और उसकी ज़ात पर कामिल तवक्कुल करें तो अल्लाह तआला उन के लिए हर मुश्किल में काफ़ी होगा। एक और जगह फ़रमाया कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और मोमिनों को अल्लाह पर ही तवक्कुल करना चाहिए।

हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलातु वल्लाम फ़रमाते हैं कि वाक़िआत हज़रत ख़ातमुल-अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नज़र करने से यह बात निहायत वाज़ेह है कि आँहज़रत ﷺ आला दर्जे के यकरंग, साफ़ बातिन, ख़ुदा के लिए जाँबाज़ और ख़िलक़त के बीम व उम्मीद यानी ख़ौफ़ और उम्मीद से बिल्कुल मुँह फेरने वाले और महज़ ख़ुदा पर तवक्कुल करने वाले थे। नबियों के वाक़िआत में ख़तरात के ऐसे मवाक़े और फिर ख़ुदा पर तवक्कुल करते हुए इस क़दर साबित-क़दमी और अस्तिक़लाल की ऐसी मिसाल नहीं मिलती।

फिर आप फ़रमाते हैं कि तबत्तुल यानी ख़ुदा तआला से दिल लगाना और दुनिया को छोड़ना इस का अमली नमूना हमारे पैग़ंबर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। न आप को किसी की मदह की परवाह थी न किसी के बुरा कहने की। आप को बेशमार तकालीफ़ पेश आईं मगर कोई लालच और तमअ आप को उस काम से न रोक सका जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा की तरफ़ से करने आए थे। जो शख़्स मुतबत्तिल होगा, मुतवक्किल भी होगा। गोया मुतवक्किल होने के वास्ते मुतबत्तिल होना शर्त है। जब तक इंसान दूसरों पर भरोसा और तकिया करता है, उस वक़्त तक ख़ालिसतन अल्लाह पर तवक्कुल नहीं हो सकता। जब ख़ुदा की तरफ़ इनक़िता करता है तो दुनिया की तरफ़ से तोड़ता है और ख़ुदा में पैवंद करता है। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कामिल मुतबत्तिल भी थे और कामिल मुतवक्किल भी।

हज़रत अक़दस मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह न समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है, वो बड़ी ताक़त वाली ज़ात है। जब उस पर किसी अमर में भरोसा करोगे वो ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। जो कोई अल्लाह पर तवक्कुल करता है अल्लाह उस के लिए काफ़ी है। तक़वा की बरकात में से एक यह है कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को उन मसाइब से मख़लिसी बख़्शता है जो दीनी उमूर के हारिज हों। इसी तरह अल्लाह तआला मुत्तक़ी को ख़ास तौर पर रिज़क़ देता है। आँहज़रत ﷺ को बावजूद उम्मी होने के तमाम जहाँ का मुकाबला करना था, जिस में अहले-किताब, फ़लासफ़र और आला दर्जे के इल्मी मज़ाक़ वाले लोग और आलिम-फ़ाज़िल शामिल थे, लेकिन आप को रूहानी रिज़क़ इस क़दर मिला कि आप सब पर ग़ालिब आए और उन सबकी ग़लतियाँ निकालीं।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम अल्लाह पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा उस के तवक्कुल का हक़ है तो ज़रूर तुम्हें रिज़क़ दिया जाएगा जैसे परिंदों को दिया जाता है। वो सुबह खाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भर कर वापस आते हैं।

हज़रत अबू ज़र रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में बे-रग़बती हलाल को हराम करना और न माल ज़ाया करना है। दुनिया में बे-रग़बती यह है कि जो तुम्हारे दोनों हाथों में है वो उस से ज़ियादा क़ाबिल-ए-एतमाद न हो जो अल्लाह के हाथ में है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: आँहज़रत ﷺ रोज़मर्रा के मुआमलात में भी अल्लाह तआला पर तवक्कुल को सामने रखते हुए दुआएँ किया करते थे। हज़रत उम्मे सलमा ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने घर से निकलते तो कहते कि अल्लाह के नाम के साथ मैंने अल्लाह पर तवक्कुल किया। ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह चाहते हैं इस से कि हम फिसल जाएँ या भटक जाएँ, ज़ुल्म करें या हम पर ज़ुल्म किया जाए, जहालत से पेश आएँ या हमारे साथ जहालत से पेश आया जाए। हज़रत बुरैदा रज़िअल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने घर से बाहर तशरीफ़ लाते तो कहते कि अल्लाह के नाम के साथ मैंने अल्लाह पर भरोसा किया और अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से नेकी की ताक़त और बुराई से बचने की क़ुव्वत हासिल होती है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इससे कि मैं गुमराह हो जाऊँ या मुझे गुमराह किया जाए, मैं लग़ज़िश का शिकार हो जाऊँ या मुझे लग़ज़िश में डाला जाए, मैं किसी पर ज़ुल्म करूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, मैं जहालत का इरतिकाब

करूँ या मेरे साथ जहालत का बर्ताव किया जाए और मैं किसी पर ज़ियादती करूँ या मेरे ख़िलाफ़ ज़ियादती की जाए।

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत बिलाल के पास तशरीफ़ ले गए। आप ने उनके पास खजूरों का एक ढेर देखा और फ़रमाया: ऐ बिलाल! यह क्या है? हज़रत बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि यह कुछ खजूरें हैं जो मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ज़ख़ीरा कर रखी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ बिलाल! क्या तुम्हें यह ख़ौफ़ नहीं कि क़ियामत के दिन इस का धुआँ जहन्नम में उठे। ऐ बिलाल! ख़र्च करो और अर्श के मालिक की तरफ़ से तंगदस्ती का ख़ौफ़ न करो।

हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलातु वल्लाम फ़रमाते हैं कि इंसान के ईमान में तरक़्क़ी तब हो सकती है कि वो ख़ुदा तआला के फ़र्मूदा पर चले और ख़ुदा पर अपने तवक्कुल को क़ायम करे। हज़रत रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल को फ़रमाया कि क्या तू कल के ख़ुदा पर ईमान नहीं रखता? जो ख़ुदा तुझे आज दे रहा है क्या वो कल नहीं देगा? लेकिन इस नसीहत का यह मतलब नहीं कि फ़ज़ूल-ख़र्ची की जाए या अपने असबाब का सामान न किया जाए। ज़रूरी है कि असबाब भी इख़्तियार किए जाएँ और अल्लाह तआला पर तवक्कुल भी रखा जाए। तवक्कुल का यह मतलब नहीं कि एहतियात से काम न लिया जाए और असबाब का इस्तेमाल न किया जाए।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मैं ऊँट का घुटना बाँधूँ और तवक्कुल करूँ या उसे खुला छोड़ दूँ और तवक्कुल करूँ? आप ने फ़रमाया: इसका घुटना बाँधो और तवक्कुल करो।

हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलातु वल्लाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा पर भरोसे के यह मायने नहीं कि इंसान तदबीर को हाथ से छोड़ दे बल्कि यह मायने हैं कि तदबीर पूरी करके फिर अंजाम को ख़ुदा पर छोड़े और इसका नाम तवक्कुल है। अगर इंसान तदबीर नहीं करता और सिर्फ़ तवक्कुल करता है तो उस का तवक्कुल फूका है, और अगर सिर्फ़ तदबीर करके उसी पर भरोसा करता है और ख़ुदा पर तवक्कुल नहीं करता तो वो तदबीर भी फूकी है।

हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ दीनार आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनमें से सब तक़सीम कर दिए और सिर्फ़ छह दीनार बाक़ी रह गए जिन्हें आप ने अपनी अज़वाज-ए-मुतहारात में से एक के पास रखवा दिया। अपनी आख़िरी बीमारी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दीनारों के बारे में दरियाफ़्त फ़रमाया। जब मालूम हुआ कि अभी ख़र्च नहीं हुए तो वो दीनार मँगवाए गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी हथेली पर रखा, गिना तो वो छह दीनार थे और फ़रमाया कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपने रब पर क्या तवक्कुल हुआ अगर ख़ुदा से मुलाक़ात और दुनिया से रुख़सत होते वक़्त यह दीनार उस के पास हों। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वो तमाम दीनार अल्लाह की राह में सदक़ा कर दिए और उसी दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमें तो वही पहुँचता है जो अल्लाह ने हमारे लिए मुक़र्रर कर छोड़ा है। वो हमारा कारसाज़ है और मोमिनों को चाहिए कि वो अल्लाह पर ही तवक्कुल रखें।

आँहज़रत ﷺ के उस्वा में तवक्कुल की आला मिसाल मुसैलमा कज़्ज़ाब के वाक़िया में भी मिलती है। मुसैलमा कज़्ज़ाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में आया और कहने लगा कि अगर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने बाद मुझे जानशीन बनाएँ तो मैं उन का पैरौ हूँगा। वो मदीना में अपनी क़ौम की एक जमाअत-ए-कसीर के साथ आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास तशरीफ़ ले गए और हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मोस रज़िअल्लाहु अन्हु आप के साथ थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में खजूर की एक शाख़ का टुकड़ा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुसैलमा के सामने खड़े हुए और फ़रमाया कि अगर तू मुझसे यह शाख़ भी

माँगे तो मैं तुझे न दूँगा और जो कुछ ख़ुदा ने तेरे लिए मुक़द्दर किया है तू उससे आगे नहीं बढ़ेगा। अगर तू पीठ फेर कर चला जाएगा तो अल्लाह तआला तेरी कोंचें काट देगा।

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ि. इस हवाले से फ़रमाते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी काम में भी दुनिया और अहले-दुनिया की तरफ़ तवज्जो न थी और दुनियावी असबाब की तरफ़ आप आँख उठा कर भी न देखते थे बल्कि हर काम में आप की नज़र ख़ुदा तआला ही की तरफ़ लगी रहती कि वही कुछ करेगा। आप तवक्कुल का एक कामिल नमूना थे। मुसैलमा, रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में एक लश्कर-ए-जर्रार ले कर मदीना में आया और यह दरख़्वास्त की कि अगर आप उसे अपने बाद ख़लीफ़ा बना लें तो वो अपनी जमाअत समेत आप की इत्तिबा इख़्तियार कर लेगा, लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दरख़्वास्त को फ़ौरन रद्द कर दिया। उस वक़्त काफ़िरों का ज़ोर था, आप को ईज़ाएँ पहुँचाई जाती थीं, क़ैसर-ओ-किसरा के हुक्काम अहकाम भेज रहे थे, बनी ग़स्सान लड़ने की तैयारियाँ कर रहे थे और विभिन्न हुकूमतें इस नई तहरीक को शक-ओ-शुबा की निगाहों से देख रही थीं। ऐसे वक़्त में इंसानी अक़्ल यह चाहती थी कि दोस्त और दुश्मन को अपने साथ मिलाया जाए, लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तवक्कुल ख़ुदा तआला पर था। आप का दिल यक़ीन से पुर और सीना ईमान से मामूर था। आप ने मुसैलमा और उस के लश्कर पर भरोसा करना एक लम्हे के लिए भी मुनासिब न समझा और साफ़ कह दिया कि अगर एक खजूर की शाख़ के बदले में भी उस की हिमायत हासिल करनी पड़े तो आप उस की तरफ़ आँख उठा कर नहीं देखेंगे। इस वाक़िया से मालूम होता है कि आँहज़रत ﷺ का इनकार किसी दुनियावी ग़रज़ के लिए न था बल्कि ख़ुदा तआला पर बे-पायाँ यक़ीन और कामिल तवक्कुल का नतीजा था। आप ने अपनी औलाद को अपने बाद जानशीन नहीं बनाया बल्कि हज़रत अबू बक्र रज़िअल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त की तरफ़ इशारा फ़रमाया। आप चाहते तो मुसैलमा को पकड़ कर मरवा सकते थे, क्योंकि वो मदीना में आप के हाथ के नीचे था, लेकिन इस मुआमले में भी आप ने अल्लाह तआला पर तवक्कुल किया कि वो ख़ुद इस मूज़ी को हलाक करेगा।

पस आँहज़रत ﷺ की ज़िंदगी हमें तवक्कुल का यह आला नमूना दिखाती है कि अल्लाह तआला की तरफ़ मुकम्मल झुकना, उसकी रज़ा को मुक़द्दम करना, दुनियावी मुख़ालफ़त से मुतास्सिर न होना, असबाब को इख़्तियार करके नतीजा अल्लाह तआला पर छोड़ देना और हर हाल में उस की मदद पर यक़ीन रखना ही हक़ीक़ी तवक्कुल है।

**अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व बारिक व सल्लिम।**

ख़ुत्बा-ए-जुमा के आख़िर में हुज़ूर-ए-अनवर ने शहीद मिर्ज़ा सफ़दर महमूद साहब मंडी बहाउद्दीन, अज़ीज़ा अमतुल अज़ीज़ साहिबा नवासी हज़रत मुसलेह मौऊद रज़िअल्लाहु अन्हु और मुकर्रम रशीद अहमद अयाज़ साहब पेंशनर सदर अंजुमन अहमदिया, हर सह मरहूमीन का ज़िक्र-ए-ख़ैर फ़रमाते हुए नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔